परमात्म ऊर्जा

अगर एक-एक मर्यादा को जीवन में लाने का प्रयत्न करेंगे तो कहाँ मुश्किल कहाँ सहज लगेगा और इसी प्रैक्टिस में व इसी कमज़ोरी को भरने में ही समय बीत जायेगा। इसलिए अब एक सेकण्ड में मर्यादा पुरूषोत्तम बनो। कैसे बनेंगे? सिर्फ सदा स्नेही बनने से। बाप का सदैव स्नेही बनने से, बाप द्वारा सदा सहयोग प्राप्त होने से मुश्किल बात सहज हो जाती है। जो सदा स्नेही होंगे उनकी स्मृति में भी सदा स्नेह ही रहता है, उनकी सूरत से सदा स्नेही की मूर्त प्रत्यक्ष दिखाई देती है। जैसे लौकिक रीति से भी अगर कोई आत्मा किस आत्मा के स्नेह में रहती है तो फौरन ही देखने वाले अनुभव करते हैं कि यह आत्मा किसके स्नेह में खोई हुई है। तो क्या रूहानी स्नेह में खोई हुई आत्माओं की सूरत स्नेही मूर्त को प्रत्यक्ष नहीं करेगी? उनके दिल का लगाव सदैव उस स्नेही से लगा हुआ रहता है। तो एक ही तरफ लगाव होने से अनेक तरफ का लगाव सहज ही समाप्त हो जाता है। और तो क्या लेकिन अपने आप का लगाव अर्थात् देह-अभिमान, अपने आपकी स्मृति से भी सदैव स्नेही खोया हुआ होता है। तो सहज युक्ति व विधि जब हो सकती है, तो क्यों नहीं सहज युक्ति, विधि से अपनी स्टेज की स्पीड में वृद्धि लाती हो! सदा स्नेही, एक सर्वशक्तिमान के स्नेही होने कारण सर्व आत्माओं के स्नेही स्वतः बन जाते हैं। इस राज़ को जानने से राज़युक्त, योगयुक्त व दिव्यगुणों से युक्तियुक्त बनने के कारण राज़युक्त आत्मा सर्व आत्माओं को अपने आप से सहज ही राज़ी कर सकती है। जब राज़युक्त नहीं होते हो, तब कोई को राज़ी नहीं कर सकते हैं। अगर उसकी सूरत व साज़ द्वारा उसके मन के राज़ को जान जाते हैं, तो सहज ही उसको राज़ी कर सकते हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ सूरत को देखते, साज़ को सुनते उनके मन के राज़ को न जानने के कारण अन्य को अभी भी नाराज़ करते हो व स्वयं नाराज़ होते हो। सदा स्नेही के राज़ को जान राज़युक्त बनो। अच्छा। भविष्य में विश्व के मालिक बनना है, यह तो पता है ना! मगर अभी क्या हो? अभी विश्व के मालिक हो व सेवाधारी हो?

जयपुर-बनी पार्क। प्रसिद्ध न्यूरोसर्जन डॉ.सचिन गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् चित्र में साथ हैं ब्र.कु. रेणुका बहन व ब्र.कु.कुणाल।

कथा सरिता

जैसा दूसरों को देंगे... वैसा हमारे पास लौटकर आयेगा

एक छोटे से गाँव में एक आदमी रहता था। उसके घर के पास में एक पहाड़ था। जहाँ पर वह रोज़ सुबह जाता था। वहाँ पर थोड़ी देर उस पहाड़ पर बैठता फिर वापिस आ जाता। तो रोज़ की तरह वह सुबह-सुबह जा रहा था,पीछे से उसका छोटा-सा बेटा आया। उसने आकर के उसका हाथ पकड़ लिया और कहा कि आज मैं भी आपके साथ चलूँगा। उसने पहले तो उसको थोड़ा समझाया, मना किया और कहा कि जो रास्ता है वो बहुत ही छोटा है और चढ़ाई बहुत ज़्यादा है तो तुम मेरे साथ नहीं चल पाओगे। लेकिन फिर जब उस बेटे ने ज़िद्द की, तो पिता मान गया। वो दोनों पहाड़ पर चढ़ने लगे, पिता ने बेटे का हाथ कसकर के पकड़ा हुआ था, लेफ्ट साइड में पहाड़ था और राइट साइड में खाई थी और रास्ता बहुत ही छोटा था। वो पहाड़ की चोटी तक पहुँचने ही वाले थे तभी रास्ते में एक बड़ा-सा पत्थर आया क्योंकि पिता उस रास्ते से रोज़ आता था तो उसको पता था कि वहाँ पर पत्थर है तो वह साइड से निकल गया। लेकिन जो बेटा था उसका ध्यान कहीं और था तो उसका घुटना जा करके उस बड़े से पत्थर से टकरा गया।

उस बच्चे के मुँह से एक चीख निकली और जैसे ही वह चीखा उसकी आवाज़ उन पहाड़ों में गूंजने लगी। इससे पहले उस बच्चे ने कभी भी अपनी आवाज़ की गूंज नहीं सुनी थी तो उसे समझ नहीं आ रहा था कि ये क्या हो रहा है? वह अंदर से थोड़ा-सा घबरा गया और उसे लगा कि शायद कहीं कोई है जो छुपकर उसे देख रहा है और मज़ाक उड़ा रहा है।

फिर उस बच्चे ने बोला "कौन हो तुम" तो जब उस बच्चे ने उस गूंज को सुना तो उसे गुस्सा आ गया। उसे लगा कि कौन है? ये जो मेरा मज़ाक उड़ाए चला जा रहा है, फिर उसने गुस्से से कहा कि मैं तुम्हे छोड़ूंगा नहीं और फिर जैसे ही उसने गूंज को सुना वह घबरा गया। उसके पिता समझ गए थे कि क्या हो रहा है। उसने अपने पिता का हाथ कस के पकड़ लिया और उनसे पूछा कि कौन है ये जो मुझे इतना तंग कर रहा है, कौन है? ये जो मुझे इतना डरा रहा है तो उसके पिता थोड़ा-सा मुस्कुराये और उन्होंने खाई की तरफ देखा और ज़ोर से बोला मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। यह सुनकर वह बच्चा हैरान हो गया! और उसे समझ नहीं आया कि क्या हो रहा है? क्योंकि वही इंसान जो उसका मज़ाक उड़ा रहा है, उसको तंग कर रहा है। वह उसके पिता को बोल रहा है कि मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। तो उसके पिता ने अपने बेटे को देखा और वो समझ गये कि उसके मन में क्या चल रहा है? और फिर दुबारा उन्होंने बोला तुम बहुत अच्छे हो और ये सुनकर उनका बेटा थोड़ा-सा मुस्कुराया और पूछा अपने पिता से कि ये क्या हो रहा है? फिर उसके पिता ने अपने बेटे को समझाया कि ये जो आवाज़ तुम सुन रहे हो ना! ये किसी और की आवाज़ नहीं है। ये तुम्हारी ही आवाज़ है जो कि पहाड़ों में गूंज रही है और तुम्हें अपनी ही आवाज़ सुनाई दे रही है। जैसे तुम बोलते हो ठीक वैसा ही तुम्हें सुनाई देता है। अगर तुम गुस्से से कुछ कहोगे तो पलट करके जो आवाज़ आएगी उसमें भी गुस्सा होगा। लेकिन अगर तुम कुछ अच्छा कहोगे तो वो आवाज़ भी अच्छी होगी।

बिल्कुल इसी तरह से हमारी ज़िंदगी में भी होता है। जैसा तुम अपने मन में इस ज़िंदगी के बारे में सोचते हो। ये ज़िंदगी तुम्हारे लिए बिल्कुल वैसी ही हो जाती है। अगर तुम मन ही मन अपने आप से ये बोलते रहोगे की मेरी ज़िंदगी तो बहुत बुरी है तो तुम्हारी ज़िंदगी सच में बुरी हो जाएगी और अगर तुम अपनी ज़िंदगी से प्यार करोगे तो तुम्हारी ज़िंदगी भी तुमसे प्यार करेगी।

ये बात उस बच्चे के दिमाग में घर कर गयी और फिर वे दोनों उस पहाड़ की चोटी पर गए, लेकिन बच्चे के दिमाग में यही बात घूम रही थी और फिर वह बच्चा खिल-खिलाकर हँसा और उसने अपने दोनों हाथ खोले और अपनी पूरी ताकत से बोला मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।

बुद्धिमान साधु

एक बड़ा-सा राजमहल था, जिसके द्वार पर एक साधु आया और वो साधु द्वारपाल से आकर कहने लगा कि अंदर जाकर राजा से कहो कि उनका भाई उनसे मिलने आया है। द्वारपाल सोचने लग गया कि ये साधु के भेष में राजा से कौन मिलने आया है जो राजा को अपना भाई बता रहा है। फिर द्वारपाल ने समझा कि क्या पता कोई दूर का रिश्तेदार हो जिसने सन्यास ले लिया हो। द्वारपाल ने अंदर जाकर सूचना दी जिसके बाद राजा मुस्कुराने लगे और उन्होंने कहा कि साधु को अंदर भेज दो।

साधु ने पूछा, कैसे हो भैया?
राजा ने जवाब दिया, मैं ठीक हूँ, तुम बताओ, तुम कैसे हो?
साधु ने राजा को कहा कि मैं जिस महल में रहता हूँ वो बहुत ही ज़्यादा पुराना हो गया है। कभी भी टूटकर गिर सकता है। यहाँ तक कि मेरे 32 नौकर थे वो भी एक-एक करके चले गए। ये सब सुनकर राजा ने साधु को 10 सोने के सिक्के देने का आदेश दिया। पर साधु ने कहा 10 सोने के सिक्के तो कम हैं। ये सुनकर राजा ने कहा कि अभी तो इतना ही है तुम इससे काम चलाओ। इसके बाद साधु वहाँ से चला गया।

साधु को देखकर मंत्रियों के मन में भी कई सवाल उठ रहे थे, उन्होंने राजा से कहा कि जितना हमें पता है आपका तो कोई भाई नहीं है,तो आपने उस साधु को इतना बड़ा इनाम क्यों दिया? राजा ने जवाब देते हुए कहा, देखो, भाग्य के दो पहलू होते हैं, राजा और रंक, इस नाते से उसने मुझे भाई बोला।

राजा ने समझाते हुए कहा कि जर्जर महल से उसका जवाब उसका बूढ़ा शरीर था, 32 नौकर से उसका मतलब 32 दाँत थे। समंदर के बहाने उसने मुझे उल्हना दिया कि राजमहल में उसके पैर रखते ही मेरा राजकोष सुख गया, क्योंकि मैं मात्र उसे दस सोने के सिक्के दे रहा था जबकि मेरी हैसियत उसे सोने से तोल देने की है। इसलिए राजा ने ऐलान किया कि मैं उसे अपना सलाहकार नियुक्त करूँगा।

शिक्षा : किसी व्यक्ति के बाहरी रंग रूप से उसकी बुद्धिमत्ता का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता।